अध्यात्म - एक विषय-प्रयोग, एक विचार

श्री राजू जुयाल,
शोध सहायक

अध्यात्म क्या है ? आखिर क्यों है इसकी आवश्यकता ?

आत्मा का अध्ययन ही अध्यात्म है । अच्छे व बुरे कार्यों का सही आकलन ही अध्यात्म है ।

ईश्वर के प्रति श्रद्धा व विश्वास ही अध्यात्म है । सतकर्मों को जीवन का आधार बनाकर उस पर चलना ही अध्यात्म है । इसको जानना व समझना बहुत जरूरी है । यह एक ऐसा विषय है जिस पर बहुत कम मनुष्यों ने गहराई से सोचा व जानने की कोशिश की, उसका जन्म पृथ्वी पर मनुष्य रूप में क्यों हुआ और उसका उद्देश्य क्या है ?

मनुष्य के दो रूप होते है - एक आंतरिक व दूसरा बाह्य । आतंरिक रूप आत्मा का रूप होता है जो सदैव अच्छे कर्मो को करने की प्रेरणा देता है व अच्छे बुरे का ज्ञान कराता रहता है । बाह्य रूप एक ऐसे समाज का होता है जो वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप चलने को प्रेरित करता है और उन पर चलकर मनुष्य कई विकारों से ग्रसित हो जाता है -जैसे ईष्या, द्वेष, लालच, दिखावट, मैं और तेरा मेरा इत्यादि । इस प्रकार मनुष्य अंत तक इस माया रूपी जाल में उलझ कर रह जाता है ।

कलयुग में मानव समाज की आवश्यकता है - सुख व शान्ति । इन दोनों का अभाव मानव जीवन में दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है । अत : आज के युग में यह आवश्यक है कि मनुष्य स्वयं को जाग्रत करे तथा चिंता व तनाव भरे जीवन से मुक्त होकर सुख व शांति का अनुभव करे । किताबी ज्ञान अर्जित करना, धन अर्जित करना तथा गृहस्त जीवन भोगना ही मनुष्यों का उद्देश्य नहीं है परन्तु इन सभी से मुख भी नही मोड़ा जा सकता । अत : मनुष्य एकाग्र होकर स्वयं का विश्लेषण करें, कि उसके द्वारा किये गये या किये जा रहे कर्मों के द्वारा किस प्रकार मानव समाज का उद्धार हो सकता है । यह केवल सतकर्मो के द्वारा ही संभव है ।

वर्तमान युग में मानव समाज में यह भावना जगाकर कि मनुष्यों में मनुष्य के प्रति भेदभाव, जाति व अन्य किसी विषयों से न होकर बल्कि उसके कर्मो से हो । वह कर्म जिसके द्वारा किसी प्राणी को शारीरिक, आर्थिक व मानसिक कष्ट व हानि न हो, बल्कि सुख की अनुभूति हो यही सतकर्म है । लेकिन प्रश्न है मानवजाति के अंदर कैसे जाग्रत हो - सतकर्म ?

***